CHAPTER TWO	**अध्याय दो**
Love; Desire; Sex; Dependency	**प्रेम, इच्छा, यौनाचार, निर्भरता**
-1-	–१–
Where There Is Dependency, Attachment, There Is No Love	जहां निर्भरता व आसक्ति हों, वहां प्रेम नहीं रह सकता
Psychologically, then, our relationships are based on dependence, and that is why there is fear. The problem is not how not to depend, but just to see the fact that we do depend.	मनोवैज्ञानिक तौर पर हमारे संबंध निर्भरता पर आधारित रहते हैं और इसीलिए इनमें भय का वास रहता है। समस्या यह नहीं है कि निर्भर कैसे न रहें, हमें बस इस तथ्य को देखना है कि हम निर्भर हैं।
Where there is attachment there is no love. Because you do not know how to love, you depend, and hence there is fear. What is important is to see that fact, and not ask how to love, or how to be free from fear.	जहां आसक्ति रहती है वहां प्रेम नहीं रहता। चूंकि आप प्रेम करना नहीं जानते, आप निर्भर रहते हैं, और इसीलिए इसमें भय बना रहता है। महत्त्वपूर्ण है इस तथ्य को देखना, न कि यह पूछना कि प्रेम कैसे किया जाए या भय से मुक्त कैसे हों।
-2-	–२–
Where There Is Dependency, There Is Fear	जहां निर्भरता रहती है वहां भय रहता है
Without refuting, accepting, or giving opinions about it, without quoting this or that, just listen to the fact that where there is attachment there is no love, and where there is dependency there is fear. I am talking of psychological dependency, not of your dependence on. the milkman to bring you milk, or your dependence on. the railway, or on a bridge. It is this inward psychological dependency on ideas, on people, on properly, that breeds	इस बात का खंडन किये बिना, इसे स्वीकृत किये बिना, इस बारे में अपना कोई अभिमत दिये बिना, इस या उस का उल्लेख किये बिना, इस तथ्य को ध्यानपूर्वक सुन लीजिए कि जहां आसक्ति होती है वहां प्रेम नहीं होता और जहां निर्भरता रहती है वहां भय रहता है। मैं मनोवैज्ञानिक निर्भरता की बात कर रहा हूं, न कि आपके दूधवाले पर आपकी निर्भरता की, जो आपके लिए दूध लाता है, न ही रेलवे पर या किसी पुल पर आपकी निर्भरता की। यह

Edited with the demo version of
Infix Pro PDF Editor

To remove this notice, visit:
www.iceni.com/unlock.htm

fear.	विचारों, व्यक्तियों, वस्तुओं पर आपकी आंतरिक मनोवैज्ञानिक निर्भरता है जो भय को जन्म देती है।
-3-	–३–
Love Comes in Understanding Relationship	संबंधों की समझ में प्रेम प्रवेश करता है
Love Is something that cannot be cultivated; love Is not a thing to be bought by the mind. If you say, "I am going to practice being compassionate," then compassion is a thing of the mind, and therefore not love. Love comes into being darkly, unknowingly, fully, when we understand this whole process of relationship. Then the mind is quiet; it does not fill the heart with things of the mind, and therefore that which is love can come Into being.	प्रेम ऐसा कुछ है जिसे उपजाया नहीं जा सकता, और, प्रेम कोई वस्तु नहीं है जिसे मन द्वारा खरीदा जा सके। यदि आप कहते हैं, ‘‘मैं करुणापूर्ण होने का अभ्यास कर रहा हूं’’ तो वह करुणा आपके मन की एक चीज़ होगी, उसमें कोई प्रेम नहीं होगा। जब हम संबंध के पूरे सिलसिले को समझ लेते हैं तब प्रेम का चुपके से, अनजाने ही और भरपूर आगमन होता है। मन मौन हो जाता है, वह हृदय को दिमाग की बातों से नहीं भरता, तभी अवतरित हो पाता है प्रेम।
-4-	–४–
Why Have We Made Sex so Important?	हमने यौनाचार को इतना महत्त्व क्यों दे रखा है?
What do we mean by the problem of sex? Is it the act, or is it a thought about the act? Surety, it is not the act. The sexual act is no problem to you any more than eating is a problem to you, but if you think about eating or anything else all day long because you have nothing else to think about, it becomes a problem to you...Why do you build it up, which you are obviously doing? The cinemas, the magazines, the stories, the way women dress: everything is building up your thoughts of sex. And why does the mind build it up; why does the mind think about sex at all? Why, sirs and ladies? It is your problem. Why?	यौनाचार की समस्या से आपका तात्पर्य क्या है? यह समस्या उस क्रिया की है या उस क्रिया के बारे में विचार की? निश्चय ही, यह समस्या उस क्रिया की नहीं है। जैसे भोजन करना आपके लिए कोई समस्या नहीं है वैसे ही यौन क्रिया आपके लिये कोई समस्या नहीं है। परंतु, यदि आप खाने के या किसी अन्य बात के बारे में सारे दिन सोचते रहेंगे, क्योंकि आपके पास सोचने के लिये कुछ और नहीं है, तो यह सोचना आपके लिये समस्या बन जाएगा। आप यह सब क्यों रचते चले जाते हैं––जो आप निस्संदेह कर रहे हैं?––सिनेमा, पत्रिकाएं, कहानियां, महिलाओं के वस्त्र पहनने के तरीके––ये सभी चीज़ें आप के यौनाचार के विचार को उकसा रही हैं। परंतु मन इस को क्यों उकसा रहा है, मन यौनाचार के बारे में सोचता ही क्यों है? यह आपकी समस्या है, क्योंकर?
Why has it become a central issue in your	क्यों यह आपके जीवन का मुख्य मुद्दा बन गया

life? When there are so many things calling, demanding your attention, you give complete attention to the thought of sex. What happens; why are your minds so occupied with it? Because that is a way of ultimate escape, is it not? It is a way of complete self-forgetfulness.	है? जबकि अनेकानेक चीज़ें आपको पुकार रही हैं, आपका ध्यान आकृष्ट कर रही हैं, फिर भी आप अपना पूरा ध्यान यौनाचार के विचार को ही दे रहे हैं। यह हो क्या रहा है, क्यों आपका मन इससे इतना अधिक ओतप्रोत है? क्योंकि यह चरम पलायन का एक तरीका है, है न? अपने आपको पूरी तरह भुला देने का एक तरीका है यह।
For the time being, at least for the moment, you can forget yourself—and there is no other way of forgetting yourself. Everything else you do in life gives emphasis to the 'me', to the self. Your business, your religion, your gods, your leaders, your political and economic actions, your escapes, your social activities, your joining one party and. rejecting another—all that is emphasizing and giving strength to the 'me'... When there is only one thing in your life that is an avenue to ultimate escape, to complete forgetfulness of yourself if only for a few seconds, you cling to it because that is the only moment you are happy...	फिलहाल, कम से कम उस पल में तो आप स्वयं को भुला ही सकते हैं--और स्वयं को भुलाने का अन्य कोई तरीका नहीं है। उसके अतिरिक्त जो कुछ भी आप अपने जीवन में कर रहे हैं वह 'मैं' को, अहं को बल प्रदान करता है। आपके व्यवसाय, आपका धर्म, आपके देवी-देवता, आपके नेता, आपकी राजनीतिक व आर्थिक गतिविधियां, आपके पलायन, आपके सामाजिक कार्यकलाप, एक दल छोड़कर आपका दूसरे दल में शामिल होना--यह सब 'मैं' को प्रबलता और सशक्तता देते हैं... यदि आपके जीवन में कोई एक ही ऐसी अवस्था हो जो आपके चरम पलायन का माध्यम हो, कुछ पल के लिये ही सही परंतु खुदी को पूर्णतया भुला देने वाली हो, तो आप उसमें आसक्त हो ही जाएंगे, क्योंकि यही वह पल होता है जब आप खुश होते हैं...
So, sex becomes an extraordinarily difficult and complex problem as long as you do not understand the mind that thinks about the problem.	तो, जब तक इस समस्या के बारे में सोचने वाले मन को आप नहीं समझ लेते, यौनाचार एक अत्यंत जटिल और कठिन समस्या बना रहेगा।
-5-	-५-
Why Is Sex a Problem?	यौनाचार एक समस्या क्यों है?
Why is it that whatever we touch we turn into a problem?..Why has sex become a problem? Why do we submit to living with problems; why do we not put an end to them? Why do we not die to our problems instead of carrying them day after day, year after year? Surely, sex is a relevant question, which I shall answer presently, but there is the primary question: why do we make life into a	ऐसा क्यों है कि हम जो कुछ भी छूते हैं वह समस्या बन जाता है?..यौनाचार एक समस्या क्यों बन गया है? क्यों हमने समस्याग्रस्तता के साथ जीना एक विवशता मान लिया है, हमने समस्याओं का अंत क्यों नहीं किया है? समस्याओं को दिन-प्रतिदिन, वर्ष-प्रतिवर्ष ढोये चले जाने के बजाय हमने इनका अंत क्यों नहीं कर दिया है। निश्चय ही, यौनाचार एक सुसंगत प्रश्न है जिसका उत्तर मैं अभी दूंगा,

problem? Working, sex, earning money, thinking, feeling, experiencing, you know, the whole business of living—why is it a problem? Is it not essentially because we always think from a particular point of view, from a fixed point of view?	परंतु एक बुनियादी प्रश्न हैः हम जीवन को एक समस्या क्यों बना देते हैं? कामकाज, यौनाचार, धनोपार्जन, सोचना, महसूस करना, अनुभव करना,--जीवन का यह तमाम कारोबार एक समस्या क्यों बन गया है? अवश्य ही यह क्या इसलिये नहीं है कि हम सदैव एक ही दृष्टिकोण से, एक बंधे-बंधाये दृष्टिकोण से ही सोचते हैं?
-6-	-६-
Desire Is Not Love	इच्छा प्रेम नहीं होती
Desire is not love; desire leads to pleasure; desire is pleasure. We are not denying desire. It would be utterly stupid to say that we must live without desire, for that is impossible. Man has tried that. People have denied themselves every kind of pleasure, disciplined themselves, tortured themselves, and yet desire has persisted, creating conflict, and all the brutalizing effects of that conflict. We are not advocating desirelessness, but we must understand the whole phenomena of desire, pleasure, and pain, and if we can go beyond, there is a bliss and ecstasy which is love.	इच्छा प्रेम नहीं होती, वह तो सुख-विलास की ओर ले जाती है। इच्छा सुख-विलास ही होती है। हम इच्छा को गलत नहीं ठहरा रहे हैं। यह कहना तो एकदम मूर्खतापूर्ण होगा कि हमें इच्छारहित होकर जीना चाहिए, क्योंकि यह असंभव है। मनुष्य ऐसा प्रयास कर चुका है। लोगों ने हर प्रकार के विषय-सुख को नकारा है, स्वयं को अनुशासित किया है, स्वयं को उत्पीड़ित किया है, परंतु इच्छा तब भी बनी रही है, द्वंद्व पैदा करती रही है। और इस द्वंद्व के तमाम पाशविक परिणामों को पनपाती रही है। हम इच्छारहितता की वकालत नहीं कर रहे हैं, परंतु हमें इच्छा, मनोसुख और पीड़ा के संपूर्ण प्रपंच को समझना चाहिए। और, यदि हम इसके पार जा सकें तो जानेंगे आनंद, परम उल्लास--अर्थात प्रेम।
-	-१-

Edited with the demo version of
Infix Pro PDF Editor

To remove this notice, visit:
www.iceni.com/unlock.htm